बच्चे को जानना-समझना और सिखाने की तरकीब

अभिषेक कुमार द्विवेदी

हर कक्षा में कुछ ऐसे बच्चे होते हैं जिनके बारे में यह मान लिया जाता है कि वे सीख नहीं सकते, उनका दिमाग़ काम नहीं करता, हमेशा शैतानी करते हैं, दूसरे बच्चों को पढ़ने नहीं देते, उन्हें स्कूल की भाषा नहीं आती, आदि। यह लेख ऐसे ही तमग़ों से नवाज़े गए एक बच्चे के साथ किए गए काम के बारे में है। लेख दर्शाता है कि बच्चे के बारे में हमारी मान्यताएँ, उसकी सीखने की क्षमता में हमारा (शिक्षक, अन्य वयस्क और साथी) विश्वास कैसे उसे प्रभावित करता है। साथ ही यह भी कि बच्चे को जानने-समझने से सीखने में हम उसकी मदद कर सकते हैं। लेख इस बात पर भी प्रश्न उठाता है कि बच्चों को अलग-अलग तरह के तमग़ों से नवाज़ना, माने एक 'लेबल' दे देना क्या सही है! -सं.

हँसमुख 9 साल का है और अभी कक्षा 3 में पढ़ रहा है। वह स्कूल आने में काफ़ी नियमित है, लेकिन पढ़ने-लिखने और समझने में उसका स्तर अपेक्षित स्तर से काफ़ी कम है। कक्षा में बोलते समय वह घर की भाषा का ही प्रयोग करता है। मैं उसकी बात सुनता हूँ, लेकिन शुरू में मुझे उसकी बात समझने के लिए दूसरे बच्चों की मदद लेनी पड़ती थी। ऐसा भी नहीं था कि वह बहुत कम बात करता हो या ज़्यादातर शान्त रहे, बल्कि इसके उलट वह कक्षा में अत्यन्त सक्रिय लेकिन अव्यवस्थित रहता। उसकी हरक़तें बाक़ी बच्चों और इस तरह पूरी कक्षा को, जो कुछ भी चल रहा होता, उससे भटका देतीं। जैसे, कभी वह सीटी बजाता या पतली आवाज़ में रोने का नाटक करता और कभी चुपके से या किसी बहाने से दूसरी कक्षा में चला जाता। पढ़ाई के अलावा वह बाक़ी सारी चीज़ें करता लेकिन उनमें भी वह एक ही चीज़ से कभी बँधा नहीं रहता। जैसे, अगर उसको किसी गणितीय खेल में सम्मिलित किया जाता या सुनी हुई कहानी के बारे में चित्र बनाने के लिए कहा जाता तो वह केवल थोड़ी देर ही उसमें अपना मन लगा पाता। कोई



चित्र : हीरा धुर्वे

भी गतिविधि उसे ज़्यादा देर तक नहीं रोक सकती थी, भटकाव में ही उसे मज़ा आता। मुझे ऐसा लगने लगा था कि स्कूल उसके लिए पढ़ने से ज़्यादा दोस्तों के साथ समय बिताने की एक जगह थी, जहाँ वह अपनी कक्षा के 12-13 बच्चों के अलावा दूसरी कक्षाओं के बच्चों के साथ भी बात करने या समय बिताने के मौक़े तलाशता रहता।

स्कूल की प्रार्थना सभा की नीरस और कक्षा की बोझिल प्रक्रिया में शामिल होने की बजाय उसे कमरों की सफ़ाई करना, बच्चों की चप्पलों को जमाना, मैदान की बढ़ी घास उखाड़ना, पौधों पर पानी डालना, स्कूल की घण्टी लगाना और मैदान में फैले काग़ज़ के टुकड़ों को इकट्ठा करना ज़्यादा पसन्द है। मुझे यह समझ आया कि ये काम उसे अपेक्षाकृत आसान और रुचिकर लगते हैं।

कक्षा में नियमित रूप से जाते हुए मैं धीरे-धीरे उसे समझने लगा था। तब मैंने उसे भी गतिविधियों में शामिल करने के प्रयास किए। शुरुआत में, मैं किसी तरह बहुत कम समय के लिए उसे बाक़ी बच्चों के साथ अपनी गणित की कक्षा में शामिल करता। इस दौरान जब नम्बर कार्ड को उठाकर उसका नाम बताने, उसके लिए तीली बण्डल जमाने और नम्बरों की ट्रेन बनाने की उसकी बारी आती तो वह दूसरे बच्चों की ओर देखता और उनकी तरफ़ से कोई उत्तर आने तक इन्तज़ार करता। ऐसे मामलों में वह ख़ुद से ज़्यादा दूसरों पर विश्वास करता और उनके बताए उत्तर को सही मानता। कई बार तो वह ख़ुद के लिखे या बताए गए सही जवाब को भी किसी और के द्वारा बताए उत्तर से बदल देता। इसी तरह वह हर काम में दूसरे की नक़ल करता। दूसरा काम जो वह करने को कहता, वह था, "सर, मुझे गिनती लिखने के लिए दे दीजिए या हिन्दी की किताब से एक पेज नक़ल छापने के लिए।" ये वो काम थे जिन्हें वह हमेशा करना चाहता। अकसर वह दीवार पर लिखी गिनतियाँ या किताब से वाक्य अपनी कॉपी में लिख लाता, जिन्हें उसे समझने या पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ती।



चित्र : हीरा धुर्वे

कक्षा में गणित के काम से ऊबने से बचने के लिए कहानी सुनाई जाती थी। इस दौरान मैंने स्कूल में उपलब्ध यूनिसेफ़ द्वारा दी गई *मीना सीरीज़* की कहानियों के अतिरिक्त *गुलीवर की यात्रा, महारथी, मीना को स्कूल क्यों छोड़ना पड़ा, पहला घर, बस्तर का मोगली* जैसी पुस्तकें काम में लीं। कहानियों की थीम के अनुसार मैं ज़्यादातर वो बातें करता जो बच्चों के अनुभव और घर से जुड़ी होतीं। मसलन, किसी ने कभी कोई सपना देखा है, अच्छे दोस्त कैसे बनते हैं, हाथी ने बिल्ली को क्यों बचाया होगा, किसी जानवर का बच्चा कभी आपने पाला है, आपका स्कूल आने का मन कब नहीं करता है, आदि। इस दौरान चर्चा में दूसरे बच्चों के साथ हँसमुख भी अपनी बातें बोलचाल की भाषा में रखता, और इसी बातचीत से मुझे उसकी रुचियों और दोस्तों के बारे में पता चला।

कक्षा में सिर्फ़ उसी से ज़्यादा बात करना सम्भव नहीं था। मैंने कभी-कभी इंटरवल के समय हँसमुख से इस बारे में बात की कि स्कूल से जाने के बाद वह घर में क्या-क्या करता है और उसे क्या करना पसन्द है। अपने बारे में वह ज़्यादा कुछ नहीं बताता था। जब मैंने अपने बारे में उसे बताया कि मैं स्कूल से जाने के बाद क्या करता हूँ और मुझे क्या पसन्द है, तब ही उसने अपने बारे में बताया कि उसके घर में कौन-कौन है, घर जाकर वह घर का काम करता है, साइकिल चलाता है और शाम को दोस्तों के साथ खेलता भी है। और बात करने पर उसने बताया कि वह चाय भी बना लेता है। उसने मुझे चाय बनाने की विधि भी बताई। मैं जब भी यह पूछता कि उसे स्कूल में क्या अच्छा लगता है और वह पढ़कर क्या बनना चाहता है, इसके बारे में वह बहुत अस्पष्ट और बनावटी उत्तर देता। हालाँकि, अब कुछ वाक्य वह हिन्दी में भी बोलता क्योंकि अकेले बात करते समय उसे ही अपनी बात मुझे समझानी होती थी।



चित्र : हीरा धुर्वे

थोड़ा सहज होने के बाद दूसरे बच्चों को बण्डल बनाते, मोतीमाला में काम करते और फिर ग़लती करते देखकर अब वह भी अपने-आप इन गतिविधियों में शामिल होने लगा था, लेकिन अभी भी वह यह सब दूसरे बच्चों को देखकर ही करना चाह रहा था। एक बार जब वह गिनमाला में गिने हुए 38 मोतियों के सामने नम्बर कार्ड लगाने की कोशिश कर रहा था तो उसने दो बार असफल प्रयास के बाद कहा कि उसका दिमाग़ काम नहीं करता और वह अब नहीं करेगा। यह हाल तब था जब उसे कितनी भी ग़लतियाँ करने की छूट दी गई थी, बशर्ते हर ग़लती के बाद उसे यह ज़रूर सुनना पड़ता था कि उसके द्वारा 38 की जगह लगाया गया 18 का कार्ड क्यों और कैसे ग़लत है। उसने कहा कि वह ख़ुद की चुनी संख्या के सामने कार्ड लगाएगा ताकि वह केवल 10 से 20 के बीच की ही कोई संख्या चुनकर सही कार्ड लगा सके। ऐसा कई और मौक़ों पर भी हुआ और इससे मुझे लगा कि वह सीखने के विरुद्ध था क्योंकि नई चीज़ सीखना उसके दिमाग़ को संकट में डालने जैसा था।

स्कूल में बाक़ी शिक्षकों और कक्षा के अन्य बच्चों का व्यवहार पढ़ाई और सीखने के मामले में हँसमुख के प्रति सहानुभूतिपूर्ण रहता। वे कहते, "सर, ये ऐसा ही है। इसका दिमाग़ थोड़ा कमज़ोर है।" ये वही बात थी जो हँसमुख स्वयं भी मुझसे कहता। यानी, वह भी मान चुका था कि उसका दिमाग़ कमज़ोर है या काम नहीं करता है। इस तरह दूसरे सहपाठी भी अपनी भरी हुई वर्कबुक या परीक्षा की कॉपी उसको दे देते ताकि वह भी नक़ल कर ले।

पारिवारिक पृष्ठभूमि की बात करें तो हँसमुख अपनी बड़ी बहन के घर में कुल चार सदस्यों के बीच पाँचवाँ सदस्य है। मम्मी-पापा



चित्र : हीरा धुर्वे

जो भी वह पढ़ता है उसको याद नहीं रहता। मैंने उससे पूछा कि अगर वह चाहे तो मैं समझने और याद रखने में उसकी मदद कर सकता हूँ। वह तैयार हो गया और फिर मैंने कुछ दिन लंच के दौरान उसके साथ अकेले ही ठोस वस्तुओं और गिनमाला की मदद से संख्याओं की पहचान और मात्रा प्रदर्शन पर काम किया। वह अपनी कॉपी की बजाय फ़र्श पर ही चाक से लिखता। अकेले काम करने के दौरान उसपर ग़लत प्रयास करने के लिए सहपाठियों के उपहास का दबाव नहीं रहता था, और इस तरह उसने पहले 30 और फिर 50 तक की संख्याओं की मात्रात्मक पहचान के साथ उनको प्रदर्शित करना सीख लिया। उसके लिए यह एक बड़ी उपलब्धि थी, इसलिए उसे शाबाशी भी मिलती रही।

का साथ छोटी उम्र में ही छूट गया था, अब वह अपनी बड़ी बहन को ही मम्मी कहता है। घर में बड़ी बहन की दो बेटियाँ हैं जिनमें से एक मेडिकल की पढ़ाई के लिए बाहर रहती है और दूसरी घर में ही रहकर 12वीं कक्षा में पढ़ती है। घर में ही छोटी-सी एक मेडिकल शॉप भी है।

मुझे उसके व्यवहार के कुछ बिन्दुओं के पीछे का कारण पता चलने लगा था। जैसे, कक्षा के बाक़ी बच्चों और उसके बीच में लर्निंग गैप था जिससे पढ़ाई जाने वाली चीज़ें उसके लिए ज़्यादा चुनौतीपूर्ण थीं, कक्षा के बच्चों और शिक्षकों की उसके प्रति यह धारणा कि ‘वह सीख नहीं सकता’ और इसलिए उसको प्रॉब्लम सॉल्विंग या उसपर अभ्यास के अवसर न देना, घर में अच्छा माहौल होने के बाद भी उसकी अकादमिक प्रगति के प्रति घरवालों की उदासीनता, आदि। सारे बच्चे उसे ‘मामा’ कहकर क्यों बुलाते थे, अब ये भी मुझे समझ आया। हालाँकि, मैंने उनसे ऐसा न करने के लिए भी कहा था। इंटरवल के दौरान ही मैंने एक दिन उससे बात की कि वह ऐसा क्यों सोचता है कि उसका दिमाग़ काम नहीं करता! उसने बताया कि उसको समझ में नहीं आता है, और

जैसे ही वह इन संख्याओं को जोड़ने की संक्रिया पर काम करने लगा, उसमें आत्मविश्वास आने लगा और कक्षा में उसकी सक्रियता भी बढ़ने लगी थी। जब मैं त्रिविमीय गणितीय आकृतियों से सम्बन्धित आसपास की वस्तुओं के बारे में पूछ रहा था तो उसने बताया कि ‘पैक डीजे’ (साउंड बॉक्स) और ‘पैसे की गड्डी’ भी घनाभ के आकार की होती है। उसके ये उदाहरण बाक़ी बच्चों से बिलकुल अलग थे। अब वह अपने काम को दूसरे बच्चों से भी साझा करने लगा और बच्चे भी स्वीकारने लगे कि वह सीख सकता है। अब जब भी मैं हँसमुख से सवाल करता तो वे ख़ुद को जवाब देने से रोकते। अब तो मैंने सबसे इसपर बात की कि किसी को भी सिर्फ़ उत्तर बताने की बजाय ‘उत्तर कैसे आया’ यह बताना होगा तभी वह मददगार है। हँसमुख के

अलावा दूसरे बच्चों के साथ भी ज़रूरत पड़ने पर उनके गृह-कार्य पर अलग से चर्चा करना कक्षा की प्रक्रिया में शामिल है और सभी बच्चे इस बात को समझते हैं।

हँसमुख कक्षा में विवेक की हर बात मानता है और वह उसका अच्छा दोस्त भी है। ऐसा शायद इसलिए भी कि उसका सीखने का स्तर काफ़ी अच्छा है और इसका फ़ायदा हँसमुख को शिक्षकों द्वारा दिए सारे कामों को निपटाने में मिलता आ रहा है। विवेक को यह आसानी से समझ आ जाता था कि हँसमुख ने ग़लती कहाँ और कैसे कर दी। मसलन, विवेक को यह भी पता था कि हँसमुख हमेशा 27 को 17 कहता है या कई बार गिनते समय वह 37 को गिनना भूल जाता है। इसीलिए जब मैं कक्षा में दो-दो के समूह बनाता तो उन दोनों को साथ में लेता। इसके अलावा कभी-कभी जब मैं कक्षा में दूसरे बच्चों के साथ व्यस्त रहता हूँ, विवेक, हँसमुख की मदद करता है। हालाँकि, बीच-बीच में वह भी धैर्य खो देता है, ख़ासकर तब, जब उसके बार-बार समझाने पर भी हँसमुख एक ही ग़लती को दोहराता है, लेकिन इस सबसे उसको मेरे काम की कठिनाई ज़रूर समझ आती है और हँसमुख भी उससे कभी नाराज़ नहीं होता है।

हँसमुख के साथ मेरा काम अभी भी जारी है, लेकिन अब उसे कक्षा में अलग से समय देने की ज़रूरत नहीं पड़ती। प्रायः वह घर के लिए दिए गए काम को करके लाता है और कक्षा में पहले से अधिक सक्रियता से शामिल होता है। उसके व्यवहार में परिवर्तन हुआ है और उसमें अब सीखने का एक आत्मविश्वास आया है। अब वह ख़ुद से दो अंकों की संख्याओं को प्रदर्शित कर रहा है और उनमें संक्रियाओं (जोड़ व घटाव) को पहले ठोस वस्तुओं की मदद से और अब बिना उनके कर पा रहा है। बोलचाल की भाषा में भी अब वह कुछ वाक्य हिन्दी के इस्तेमाल कर रहा है।

अभिषेक द्विवेदी ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से भौतिकशास्त्र से स्नातक और 2022 में परास्नातक किया है। पिछले दस महीनों से अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन टोंक (राजस्थान) में एसोसिएट के रूप में कार्यरत हैं। वे प्राथमिक विद्यालय में गणित विषय में शिक्षण कार्य कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने गणित विषय की शिक्षण विधियों के अतिरिक्त बच्चों की सामाजिक, आर्थिक एवं भावनात्मक पृष्ठभूमि और कक्षा में उसके प्रभावों को समझने की कोशिश की है।

सम्पर्क : abhishek.dwivedi@azimpremjifoundation.org